National Journal of Multidisciplinary ResearchAnd Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 14-11-2023, Accepted: 29-11-2023, Published: 15-12-2023
Volume 8, Issue 2, 2023, Page No. 187-190

उच्च शिक्षण संस्थानों के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन हेतु नैक द्वारा विकसित सात निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड की महाविद्यालयी शिक्षा की स्थिति का आलोचनात्मक अध्ययन"

मनीषा पंत, दिनेश चंद्र काण्डपाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, विभाग शिक्षा विद्यालय, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तराखंड, भारत

सारांश
उत्तराखंड उत्तर भारत में स्थित एक राज्य है। उत्तराखंड में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा निरंतर विकास के प्रयास किए गए हैं। विभिन्न राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा की सुलभता तथा गुणवत्ता में वृद्धि का प्रयास किया जा रहा है। परन्तु इन प्रयासों के बावजूद भी उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार नहीं हो पाया है। प्रस्तुत शोध कार्य उत्तराखंड राज्य में उच्च शिक्षा की स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इस शोध कार्य में प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक प्रकार का शोध है। इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर कुमायूँ क्षेत्र के राजकीय महाविद्यालयों के 127 शिक्षकों से आँकड़ा संग्रहण किया गया है। ये 127 शिक्षक इस शोध कार्य के प्रतिदर्श हैं जिनका चयन द्विस्तरीय प्रतिचयन विधि से किया गया है। प्रथम स्तर पर उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि से कुमायूँ क्षेत्र के राजकीय महाविद्यालयों को लिया गया है। द्वितीय स्तर पर आकस्मिक प्रतिचयन विधि से चयनित महाविद्यालयों से कुल 127 शिक्षकों का चयन किया गया है। आँकड़ा संग्रहण के लिए "नैक द्वारा विकसित गुणवत्ता मानकों पर आधारित गुणवत्ता संकेतकों के आलोक में महाविद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में महाविद्यालयी शिक्षकों की अभिमतावली" शीर्षक उपकरण का प्रयोग किया गया है। इस उपकरण का निर्माण शोधार्थी द्वारा स्वयं किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए आवृत्ति विश्लेषण तकनीक का प्रयोग किया गया है।

मूलशब्दः उच्च शिक्षण, गुणवत्ता में वृद्धि, शिक्षकों से आँकड़ा

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में विश्वविद्यालयी शिक्षा शीर्ष स्थान पर है। माध्यमिक शिक्षा के अंत में प्रारम्भ होने वाली शिक्षा विश्वविद्यालयी अथवा उच्च शिक्षा कहलाती है। भारत में मुख्य रूप से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों की स्थापना की गयी है। जहाँ विश्वविद्यालयों पर सरकार द्वारा विशेष ध्यान दिया जाता है। इसलिए तुलनात्मक दृष्टि से विश्वविद्यालयों की स्थिति महाविद्यालयों से बेहतर है। महाविद्यालयों की तो इतनी दूर्दशा है कि अधिकांश महाविद्यालयों में न तो पीने के पानी की पर्याप्त सुविधा है न भवन की और न ही शिक्षण कक्ष हैं। महाविद्यालयों में उत्तम पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं आदि की भी समुचित व्यवस्था नहीं है। इन सभी समस्याओं को दूर करने व उच्च शिक्षा में गुणवत्ता एवं सुधार लाने हेतु 28 दिसम्बर 1953 को विश्वविधालय अनुदान आयोग अस्तित्व में आया तथा संसद के एक अधिनियम के द्वारा 1956 में इसे एक वैधानिक निकाय बना दिया गया। इसकी स्थापना का उदेश्य विश्वविद्यालयों और अन्य संगठित संगठनों की सलाहों से समस्त ऐसे उपाय करना था जो विश्वविद्यालय शिक्षा के संवर्धन और समन्वय के लिये आवश्यक हो और विश्वविद्यालयों में शिक्षण, परीक्षा, और अनुसन्धान के मानक निर्धारण करने और उन्हें बनाए रखने के लिए आवश्यक हो।

उत्तराखण्ड, जैसे नए राज्य जहाँ का अधिकांश भाग पहाड़ी है,तथा उत्तराखण्ड की विषम भौगौलिक परिस्थितियाँ होने के कारण यहाँ के महाविद्यालयों की स्थिति और भी दयनीय है। सरकार द्वारा महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन हेतु 1994 में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन (मान्यता) परिषद (NAAC) की स्थापना की गयी। राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद का मुख्य उद्देश्य 'भारत में स्व मूल्यांकन एवं बाहरी मूल्यांकन के सामंजस्य के जरिये उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और विशिष्टताओं की जाँच करना है।

उत्तराखण्ड में NAAC द्वारा प्रत्यायित कुल विश्वविद्यालयों की संख्या 6 है, जिनमें से 3 विश्वविद्यालयों को। ग्रेड मिला है व शेष 3 विश्वविद्यालयों में से 2 को B व एक को B++ ग्रेड मिला है। इसके साथ ही उत्तराखण्ड में 50 महाविद्यालयों को NAAC द्वारा ग्रेड प्रदानकिए गए हैं। जिनमें से केवल 2 महाविद्यालयों को। ग्रेड मिला है, जिनमें से भी एक महाविद्यालय को (Pt-L-M-S-GOV-POST GRADUATE COLLEGE) 2004 में A ग्रेड दिया गया, जबकि 2014 में B ग्रेड मिला है। मुख्यतः कुमाऊँ के सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों को मिलाकर 17 कॉलेजों को ग्रेड प्रदानकिए गए हैं। जिनमें से अधिकांशतः कॉलेजों को ठ या ढ ग्रेड मिले हैं। अतः, ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तराखण्ड में नैक की ग्रेडिंग के अनुसार महाविद्यालयों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। इस परिस्थिति में, उत्तराखंड में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे शिक्षकों के अनुसार वहाँ के उच्च शिक्षा की स्थिति कैसी है यह जानना रुचिकर है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

उत्तराखंड उत्तर भारत में स्थित एक राज्य है जिसका निर्माण 9 नवंबर, 2000 को भारत गणराज्य के सत्ताईसवें राज्य के रूप में किया गया था। उत्तराखंड में कुमाऊँ तथा गढ़वाल दो मंडल हैं, जिसमें कुमाऊँ क्षेत्र के अंतर्गत 6 ज़िले आते हैं। ये 6 ज़िले क्रमशः पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, चम्पावत, उधमसिंह नगर, बागेश्वर, तथा नैनीताल हैं। जिनमें चार जिले सम्पूर्ण पहाड़ी क्षेत्र के अंतर्गत, नैनीताल आधा पहाड़ी तथा आधा तराई क्षेत्र तथा उधमसिंह नगर सम्पूर्ण रूप से तराई क्षेत्र में अवस्थित है।

उत्तराखंड में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा निरंतर विकास के प्रयासकिए गए हैं। विभिन्न राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा की सुलभता तथा गुणवत्ता में वृद्धि का प्रयास किया जा रहा है। उत्तराखंड आज शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। यहाँ साक्षरता का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है। प्रदेश की आबादी के लिहाज से देखें तो औसत पौने चार लाख की आबादी पर एक विश्वविद्यालय मौजूद है। साल 2014–15 तक 93 राजकीय डिग्री कॉलेजों समेत 427 कॉलेज प्रदेश में खुल

चुके हैं। संख्यात्मक रूप से उत्तराखंड में उच्च शिक्षा की हालत काफी बेहतर है। परन्तु गुणवत्ता के आधार पर यह नगण्य है। गुणवत्ता का स्तर निम्न या अति निम्न होने के कारणों को ढूँढना अत्यंत आवश्यक है। ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ हैं, जिसके कारण महाविद्यालय सुविधा संपन्न नहीं हैं। विद्यार्थी शिक्षक अनुपात कितना है? स्थानीय लोगों की क्या आकांक्षाएं हैं? महाविद्यालयों में अध्ययन अध्यापन की मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता क्या है? क्या शिक्षक यू.जी.सी के 2009 के रेगुलेशन के अनुसार योग्य हैं? अतः, प्रत्येक क्षेत्र के महाविद्यालयों की रिपोर्ट को सामने लाना आवश्यक है। इन्हीं प्रश्नों के समाधान हेतु शोधार्थी ने इस शोध कार्य का संचालन किया।

समस्या कथन

"उच्च शिक्षण संस्थानों के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन हेतु नैक द्वारा विकसित सात निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड की महाविद्यालयी शिक्षा की स्थिति का आलोचनात्मक अध्ययन"

पदों की संक्रियात्मक परिभाषाएँ

नैक– नैक से तात्पर्य भारत सरकार द्वारा महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन हेतु 1994 में स्थापित संस्था राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन (मान्यता) परिषद (NAAC) से है।

नैक द्वारा विकसित सात निकष

इससे तात्पर्य उच्च शिक्षा संस्थानों के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन के लिए नैक द्वारा विकसित मैनुअल में चिन्हित किए गए सात की–इंडिकेटर्स से है। इस शोध कार्य में इन्हीं सातों की–इंडिकेटर्स को नैक द्वारा विकसित सात निकष कहा गया है। इनमें से तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण'है

उत्तराखंड की महाविद्यालयी शिक्षा

उत्तराखंड के महाविद्यालयों में दी जा रही उच्च शिक्षा से है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं

1. उच्च शिक्षण संस्थानों के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन हेतु नैक द्वारा विकसित सात निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड की महाविद्यालयी शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करना;
2. उच्च शिक्षण संस्थानों के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन हेतु नैक द्वारा विकसित सात निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड की महाविद्यालयी शिक्षा की स्थिति निम्नलिखित जनांकिकीय चरों के संदर्भ में अध्ययन करना
   a. यौनभेद
   b. कार्यस्थान
   c. कार्यानुभव
   d. शैक्षणिक योग्यता
   e. शिक्षण विषय तथा
   f. महाविद्यालय की अवस्थिति
3. उच्च शिक्षण संस्थानों के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन हेतु नैक द्वारा विकसित सात निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' के निम्नलिखित पाँच उपनिकषों के संदर्भ में उत्तराखंड की महाविद्यालयी शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करनाः
   1. शोध हेतु संसाधन संगठन
   2. नवाचारी अभ्यास
   3. शोध प्रकाशन एवं पुरस्कार
   4. विस्तारण सम्बंधी क्रिया कलाप
   5. सहयोग

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक प्रकार का शोध है। इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जीवसंख्या

उत्तराखंड राज्य के सभी राजकीय महाविद्यालय इस शोध कार्य की जीवसंख्या है।

प्रतिदर्शन एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए द्विस्तरीय प्रतिदर्शन विधि को अपनाया गया है। प्रथम स्तर पर उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि से कुमायूँ क्षेत्र के राजकीय महाविद्यालयों को लिया गया है। द्वित्तीय स्तर पर आकस्मिक प्रतिचयन विधि से चयनित महाविद्यालयों से कुल 127 शिक्षकों का चयन किया गया है।

शोध का उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में आँकड़ा संग्रहण हेतु शोधार्थी द्वारा स्वयं विकसित अभिमतावली का प्रयोग किया गया है। इस अभिमतावली का शीर्षक 'नैक द्वारा विकसित गुणवत्ता मानकों पर आधारित गुणवत्ता संकेतकों के आलोक में महाविद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में महाविद्यालयी शिक्षकों की अभिमतावली' है।

आँकड़ा संग्रहण

उपरोक्त अभिमतावली को शोधकार्य के लिए चयनित 127 शिक्षकों के ऊपर प्रशासित किया गया।

आँकड़ा विश्लेषण

प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई

अभिमतावली में प्रयुक्त पदों पर अनुक्रिया देने के लिए दिए गए पाँच विकल्पों में से प्रत्येक के लिए आवृति वितरण का निर्माण किया गया है। इसके लिए सबसे पहले तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' एवं उसके प्रत्येक उपनिकष के लिए निम्नतम एवं अधिकतम प्राप्तांक का निर्धारण किया गया है। इसके लिए प्रत्येक निकष एवं उपनिकष में शामिल प्रश्नों को अनुक्रिया के लिए निर्धारित निम्नतम एवं अधिकतम भारांक से गुणा कर दिया गया। उदाहरणार्थ यदि अभिमतावली के तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' में कुल 12 पद हैं तो पदों की इस संख्या को निम्नतम भारांक '1' एवं अधिकतम भारांक '5' से गुणा कर दिया गया है। प्राप्त परिणाम अर्थात '12' एवं '60' उस निकष विशेष अर्थात 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' के लिए निम्नतम संभावित प्राप्तांक एवं अधिकतम संभावित प्राप्तांक हैं। तृतीय निकष एवं उसके प्रत्येक उपनिकष के लिए प्राप्त निम्नतम संभावित प्राप्तांक एवं अधिकतम संभावित प्राप्तांक को तालिका सं० 1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1: तृतीय निकष एवं उपनिकष के लिए संभावित निम्नतम एवं अधिकतम प्राप्तांक

शोध परामर्श तथा विस्तारण	12	60	12
शोध हेतु संसाधन	1	5	1
नवाचारी	1	5	1
शोध प्रकाशन एवं पुरस्कार	2	10	2
विस्तारण संबंधी क्रियाकलाप	6	30	6
सहयोग	2	10	2

इसके पश्चात निम्नतम एवं अधिकतम संभावित प्राप्तांक की इन सीमाओं को पाँच वर्गों में बाँट दिया गया (चूँकि अभिमतावली के पदों पर अनुक्रिया देने के लिए पाँच विकल्प हैं)। इसके लिए पहले पदों की कुल संख्या को अनुक्रिया के लिए दिए गए समस्त अंकों से बारी–बारी से गुणा किया गया। उदाहरणार्थ, यदि शोध परामर्श तथा विस्तारण निकष में 12 पद शामिल हैं तो सर्वप्रथम इस संख्या '12' को अनुक्रिया के लिए दिए गए भारांकों क्रमशः, '1', '2', '3', '4' तथा '5' से गुणा किया गया।

12 X 1 = 12
12 X 2 = 24
12 X 3 = 36
12 X 4 = 48
12 X 5 = 60

इसके बाद प्राप्त गुणनफलों में से दो–दो को लेकर उनका औसत निकाला गया है जो के लिए निम्नवत हैः

(12 + 24)/2 = 18
(24 + 36)/2 = 30
(36 + 48)/2 =42
(48 + 60)/2 = 54

अब प्राप्त परिणाम के अनुसार पाँच श्रेणियाँ बनाई गईं एवं उसके लिए निम्नतम एवं अधिकतम अंक प्रदान किए गए हैं। उदाहरणार्थ शोध परामर्श तथा विस्तारण निकष के संदर्भ में ये पाँच श्रेणियाँ एवं उनके लिए प्राप्तांकों की निम्नतम एवं अधिकतम सीमा को तालिका सं० 2 में दिखाया गया हैः

तालिका 2: तृतीय निकष, उसके प्रत्येक उपनिकष के लिए प्राप्त संभावित निम्नतम एवं अधिकतम प्राप्तांक विस्तार, उनका पाँच श्रेणियों में विभाजन एवं उन श्रेणियों के लिए निम्नतम एवं अधिकतम प्राप्तांकों की सीमा

प्राप्तांकों की सीमा	श्रेणी
18 से कम	अति खराब श्रेणी
18.1-30.0	खराब श्रेणी
30.1. 42.0	सामान्य श्रेणी
42.1- 54.1	अच्छी श्रेणी
54.1 से अधिक	अत्यधिक अच्छी श्रेणी

तृतीय निकष एवं उसके प्रत्येक उपनिकषों के लिए प्रयोज्यों के प्राप्तांकों के माध्य प्राप्तांक की तुलना तालिका सं 2 से की गई तथा उसके आधार पर आवृति बंटन तैयार किए गए। इसके पश्चात यह भी देखा गया है कि तृतीय निकष एवं उसके प्रत्येक उपनिकष पर शिक्षकों द्वारा प्राप्त अंकों का पृथक–पृथक माध्य उपरोक्त पाँच श्रेणियों में से किस श्रेणी में आता है। प्राप्त परिणाम निम्नवत हैः

तृतीय निकष शोध परामर्श तथा विस्तारण से संबंधित परिणाम

इस खंड में सर्वप्रथम शोध परामर्श तथा विस्तारण से संबंधित समग्र परिणाम, जनांकिकीय चरों के आधार पर प्राप्त परिणाम एवं निकष से संबंधित विभिन्न उपनिकषों से संबंधित परिणाम को दर्शाया गया है। 127 शिक्षकों के 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' निकष पर प्राप्तांकों के माध्य प्राप्तांक '113' है अध्ययन के पश्चात यह पाया गया कि 'शिक्षण,अधिगम एवं मूल्यांकन' निकष पर 127 शिक्षकों के प्राप्तांक का माध्य प्राप्तांक 'सामान्य स्थिति' वाली श्रेणी में आता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि उत्तराखंड के उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन के संदर्भ में इन 127 शिक्षकों का अभिमत सामान्य है। इन्हीं 127 शिक्षकों के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन निकष के विभिन्न उपनिकषों 'विद्यार्थी नामांकन तथा प्रोफाइल', 'विद्यार्थी विविधता प्रबंधन', 'शिक्षण अधिगम प्रक्रिया', 'शिक्षक प्रोफाइल तथा गुणवत्ता', 'मूल्यांकन प्रक्रिया तथा सुधार', 'विद्यार्थी प्रदर्शन तथा अधिगम परिणाम', तथा 'विद्यार्थी संतुष्टि सर्वेक्षण' पर प्राप्तांकों के माध्य प्राप्तांकों क्रमशः '11.83', '15.42', '15.81', '26.08', '16.62', '12.17' तथा '14.82' की तुलना तालिका सं०2 से की गई। यह पाया गया कि शिक्षण, अधिगम तथा मूल्यांकन से संबंधित उपरोक्त सातों उपनिकषों में से प्रारंभिक दो उपनिकषों पर 127 शिक्षकों के माध्य प्राप्तांक क्रमशः, 'अच्छी स्थिति' एवं अंतिम पाँच उपनिकषों पर 127 शिक्षकों के माध्य प्राप्तांक क्रमशः 'सामान्य स्थिति' की श्रेणी में आते हैं।

3. शिक्षण, अधिगम तथा मूल्यांकन पक्ष से संबंधित समग्र परिणाम

कुल 127 शिक्षकों में से 83 शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य बताई है जबकि 31 लोगों ने स्थिति अच्छी बताई है तथा 12 लोगों ने स्थिति खराब कही है।

4. यौनभेद पर आधारित शिक्षण, अधिगम तथा मूल्यांकन से संबंधित परिणाम

कुल 127 शिक्षकों (53 महिला एवं 74 पुरुष शिक्षकों) में से सर्वाधिक महिला एवं पुरुष शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य बताई है। दोनों वर्ग के ही कुछ शिक्षकों (क्रमशः 15 महिला एवं 16 पुरुष) ने स्थिति अच्छी बताई है जबकि क्रमशः 3 महिला एवं 9 पुरुष शिक्षकों ने स्थिति खराब बताई है।

5. कार्यस्थान पर आधारित शिक्षण, अधिगम तथा मूल्यांकन से संबंधित परिणाम

कुल 127 शिक्षकों (89 पहाड़ी एवं 38 मैदानी शिक्षकों) में से सर्वाधिक पहाड़ी एवं मैदानी शिक्षकों (क्रमशः 58 एवं 25) ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य बताई है। दोनों वर्ग के ही कुछ शिक्षकों (क्रमशः 24 पहाड़ी एवं 7 मैदानी) ने स्थिति अच्छी बताई है। स्थिति खराब बताने वालि शिक्षकों की कुल संख्या 12 है जिनमें 7 पहाड़ी एवं 5 मैदानी हैं।

6. कार्यानुभव– 'अ' पर आधारित शिक्षण, अधिगम तथा मूल्यांकन पक्ष से संबंधित परिणाम

कुल 127 शिक्षकों में से 71 शिक्षक ऐसे हैं जिनके पास 10 वर्ष या उससे कम का शिक्षण अनुभव है एवं 56 शिक्षक ऐसे हैं जिनके पास 10 वर्ष से अधिक का अध्यापन अनुभव है। 10 वर्ष या उससे कम का शिक्षण अनुभव रखने वाले शिक्षकों में से क्रमशः 46 एवं 22 शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य एवं अच्छी बताई है। 10 वर्ष से अधिक का शिक्षण अनुभव रखने वाले शिक्षकों में से क्रमशः 37 एवं 9 शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य एवं अच्छी बताई है।

7. कार्यानुभव– 'ब' पर आधारित शिक्षण, अधिगम तथा मूल्यांकन पक्ष से संबंधित परिणाम

स्नातक स्तर पर पढ़ाने वाले 39 शिक्षकों में से सार्वाधिक शिक्षकों ने तथा परास्नातक स्तर पर पढ़ाने वाले 88 शिक्षकों में से भी सार्वाधिक शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य बताई है। दोनों वर्ग के ही कुछ शिक्षकों ने स्थिति अच्छी एवं खराब भी बताई है।

कार्यानुभव– 'स' पर आधारित शोध परामर्श तथा विस्तारण से संबंधित परिणाम

एक संस्था में अध्यापन कार्य का अनुभव रखने वाले एवं 54 शिक्षकों में से सार्वाधिक शिक्षकों ने तथा एक से अधिक संस्थाओं में अध्यापन का अनुभव रखने वाले 73 शिक्षकों में से भी सार्वाधिक शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य बताई है। दोनों वर्ग के ही कुछ शिक्षकों ने स्थिति अच्छी एवं खराब भी बताई है।

शैक्षणिक योग्यता पर आधारित शोध परामर्श तथा विस्तारण से संबंधित परिणाम

कुल 127 शिक्षकों में से 102 शिक्षक ऐसे हैं जिन्हें पी–एच0 डी0 की उपाधि प्राप्त है एवं 25 शिक्षक ऐसे हैं जिनके पास पी–एच0 डी0 की उपाधि नहीं है। पी–एच0 डी0 उपाधि प्राप्त शिक्षकों में से क्रमशः 66 एवं 24 शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य एवं अच्छी बताई है। पी–एच0 डी0 की उपाधि नहीं धारण करने वाले शिक्षकों में से क्रमशः 17 एवं 7 शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य एवं अच्छी बताई है।

शिक्षण विषय पर आधारित शोध परामर्श तथा विस्तारण से संबंधित परिणाम

कुल 127 शिक्षकों में से 22 शिक्षक ऐसे हैं जो विज्ञान विषय पढ़ाते है एवं 105 शिक्षक ऐसे हैं जो विज्ञानेतर वर्ग के विषय पढ़ाते हैं। विज्ञान विषय पढ़ाने वाले शिक्षकों में से क्रमशः 14 एवं 5 शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श एवं विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य एवं अच्छी बताई है। विज्ञानेतर वर्ग के विषय पढ़ानेवाले शिक्षकों में से क्रमशः 69 एवं 26 शिक्षकों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकषों 'शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य एवं अच्छी बताई है।

महाविद्यालय की अवस्थिति पर आधारित शोध परामर्श तथा विस्तारण से संबंधित परिणाम

महाविद्यालय की भौगोलिक अवस्थिति के आधार पर निर्मित शिक्षकों के चार समूहों के अधिकांश सदस्यों ने उच्च शिक्षण संस्थानों के विविध पक्षों के मूल्यांकन के लिए नैक द्वारा प्रदत्त 7 निकषों में से तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण' के संदर्भ में उत्तराखंड के उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थिति सामान्य बताई है।

तृतीय निकष शोध परामर्श तथा विस्तारण के प्रथम उप निकष 'शोध हेतु संसाधन संगठन' से संबंधित परिणाम

अधिकांश शिक्षकों (51) ने स्थिति अच्छी बताई है, 46 शिक्षकों ने स्थिति सामान्य बताई है जबकि 20 शिक्षकों ने स्थिति खराब बताई है।

तृतीय निकष शोध परामर्श तथा विस्तारण के द्वितीय उप निकष''नवाचारी अभ्यास' से संबंधित परिणाम

अधिकांश शिक्षकों ने स्थिति सामान्य बताई है, 45 शिक्षकों ने स्थिति अच्छी बताई है जबकि सिर्फ 41 शिक्षकों ने स्थिति खराब बताई है।

तृतीय निकष शोध परामर्श तथा विस्तारण पक्ष के तृतीय उप निकष 'शोध प्रकाशन तथा पुरस्कार' से संबंधित परिणाम

अधिकांश शिक्षकों (45) ने स्थिति अच्छी बताई है, 44 शिक्षकों ने स्थिति सामान्य बताई है एवं 32 शिक्षकों ने स्थिति खराब बताई है।

तृतीय निकष शोध परामर्श तथा विस्तारण के चतुर्थ उप निकष 'विस्तारण संबंधी क्रिया–कलाप' से संबंधित परिणाम

अधिकांश शिक्षकों (72) ने स्थिति सामान्य बताई है, 37 शिक्षकों ने स्थिति अच्छी बताई है जबकि 17 शिक्षकों ने स्थिति खराब बताई है।

तृतीय निकष शोध परामर्श तथा विस्तारण के पंचम उप निकष 'सहयोग' से संबंधित परिणाम

अधिकांश शिक्षकों (16) ने स्थिति अच्छी बताई है, 60 शिक्षकों ने स्थिति सामान्य बताई है जबकि 47 शिक्षकों ने स्थिति खराब बताई है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नैक द्वारा महाविद्यालयों के मूल्यांकन के लिए प्रदत्त 7 निकषों में से एक निकष 'शोध परामर्शन एवं विस्तार पक्ष' के संदर्भ में, उत्तराखंड के महाविद्यालयों की स्थिति, महाविद्यालयों में कार्य कर रहे शिक्षकों के अनुसार सामान्य है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नैक द्वारा महाविद्यालयों के मूल्यांकन के लिए प्रदत्त 7 निकषों में से एक निकष शोध परामर्श तथा विस्तारण के संदर्भ में, उत्तराखंड के महाविद्यालयों की स्थिति महाविद्यालयों में कार्य कर रहे शिक्षकों के अनुसार सामान्य है।

परिसीमाएँ

इस शोधकार्य की निम्नलिखित परिसीमाएँ हैं:

1. इस शोध कार्य में सिर्फ कुमाऊँ क्षेत्र के महाविद्यालयों को शामिल किया गया है;
2. इस शोध कार्य में नैक द्वारा महाविद्यालयों का मूल्यांकन एवं प्रत्यायन करने के लिए विकसित सात निकषों में से सिर्फ तृतीय निकष 'शोध परामर्श तथा विस्तारण को शामिल किया गया है;

संदर्भ सुचि

1. Manual for self study report Affialiated/Constituent Colleges (2013). National Assessment and Accreditation Council. New Delhi.
2. Manual for self study report Affialiated/Constituent Colleges (2017). National Assessment and Accreditation Council. New Delhi.